RECEIVED
06 SEP 2023
FORUM IAS ACADEMY

MUKHERJEE NAGAR BRANCH
ForumIAS
CENTER CODE 1903

TEST CODE 6 2 0 3 S 0 3

FIAS - MGP 2023 - Essay Test (FLT) #3

Time Allowed : Three Hours
समय : तीन घंटे

ForumIAS

Maximum Marks : 250
अधिकतम अंक : 250

ESSAY / निबंध

Name Of Candidate परीक्षार्थी का नाम	Arpit kumar.		
Roll No./अनुक्रमांक	19100 83688	**Medium**/माध्यम	English ☐ हिंदी ☑
Center Code/परीक्षा केंद्र	1903.	**Date**/दिनांक	05/09/23.

*Center Code : For Online - 1900 / Delhi : Karol bagh - 1901, ORN - 1902, Mukharji Nagar - 1903 / Patna : Boring Rd. - 2001 / Hyderabad : Jawahar Nagar - 2101

INDEX TABLE / अनुक्रमणिका

Q. No. प्र.सं.	Max. Marks अधिकतम अंक	Marks Obtained प्राप्तांक
Q.1		
Q.2		
Total Marks/कुल अंक		

Remarks/टिप्पणी :

INSTRUCTION / अनुदेश

1. Please do furnish Name, Email, Roll No and Mobile in the answer sheet.
कृपया उत्तर–पुस्तिका में नाम, ईमेल, रोल नंबर और मोबाइल नंबर भरें।

2. There are TWO Sections. Each Section has MULTIPLE topics printed in English/Hindi. You have to write on 1 topic from Each part.
प्रश्न पत्र में दो खंड हैं। प्रत्येक खंड में अंग्रेजी/हिंदी में बहु–विषय मुद्रित हैं। आपको प्रत्येक भाग में से किसी एक विषय का लेखन करना है।

3. One question in each part is compulsory.
प्रत्येक भाग में से एक प्रश्न करना अनिवार्य है।

4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
एक प्रश्न/भाग द्वारा किए गए अंकों की संख्या इसके सामने इंगित की गई है।

5. Answers must be written in the medium authorized in the admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided.
उत्तर प्रवेश पत्र में अधिकृत माध्यम में लिखे जाने चाहिए, जो कि दिए गए स्थान में इस प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के कवर पर स्पष्ट रूप से लिखा जाना चाहिए।

6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
प्रश्नों में शब्द सीमा, यदि निर्दिष्ट हो, का पालन किया जाना चाहिए।

7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum Answer Booklet must be clearly Struck off.
प्रश्न–सह–उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा गया कोई भी पृष्ठ या पृष्ठ का भाग स्पष्ट रूप से काट दिया जाना चाहिए।

For Student Only / केवल परीक्षार्थी प्रयोग हेतु

Start Time/प्रारंभ करने का समय : 2:45 pm	**End Time**/समाप्त करने का समय : 5:40pm.
Mode Of Examination/ परीक्षा की विधि : 05/09/23.	Online/ऑनलाइन ☐ Offline/ऑफलाइन ☑

For Office Use Only / केवल कार्यालय प्रयोग हेतु

ECN CODE/ ईसीएन कोड :	**EG**/ईजी : ① ② ③ ④ ⑤	**Evaluation Date**/ मूल्यांकन तिथि :

Forum IAS

MARKING SCHEME

Parameter/Criteria	*Aspects Considered*	*Total Marks*	*Essay 1*	*Essay 2*
Basic Format	Introduction + Conclusion	10		
	Body	15		
Content	Data/Facts/Interpretation/ Analysis	25		
Organisation	Flow of ideas/ Absence of Deviation from the topic	25		
Language Skills	Punctuation/Grammar/ Sentence Formation/Spellings	25		
Examiner's Discretion	Perception/ Innovation/ Engaging	25		

Parameters	*Very Good*	*Good*	*Average*	*Poor*
Coherence				
Language				
Handwriting				
Pre-writing				

Very Good	*Good*	*Average*
120 and above	100-120	Below 100

ForumIAS

SECTION – A

1. Institutions reflect the cultural values of the societies in which they are established.

   संस्थान उन समाजों के सांस्कृतिक मूल्यों को दर्शाते हैं जिनमें वे स्थापित होते हैं।

2. He who has a 'why' to live for, can bear almost any 'how'.

   जिसके पास जीने के लिए 'क्यों'/'कारण' है, वह लगभग किसी भी 'कैसे'/'परिस्थिति' को सहन कर सकता है।

3. The power of perception shapes our understanding of reality.

   अनुभूति की शक्ति वास्तविकता की हमारी समझ को आकार देती है।

4. The tree that would grow to heaven must send its roots to hell.

   जो पेड़ स्वर्ग तक बढ़ेगा उसे अपनी जड़ें नरक में भेजनी होंगी।

जिसके पास जीने के लिये कारण है, वह लगभग किसी भी परिस्थिति को सहन कर सकता है।

अभी कुछ ही दिनों पहले मैंने हिन्दी कहानीकार अमरकांत द्वारा लिखित एक कहानी 'जिंदगी और जोंक' पढ़ी। कहानी का मुख्य चरित्र शहर में भीख माँगकर जीवन यापन करने वाला रजुआ है। रजुआ अज्ञात कारणों से अपने गाँव से यहाँ शहर चला आया था, शहर में उसके लिये जीवन

Forum IAS

कुछ खास अच्छा नहीं था, कई मायनों में तो यहाँ गाँव से भी ज्यादा कठिनाई थी। रजुआ यहाँ चोरी के मिथ्या आरोप में मोहल्ले वालों से मार खाता है; दया का पात्र बनकर उसके बाद नौकर का काम व बचा खुचा भोजन दोनों पा जाता है।

दुर्भाग्यवश कुछ ही वर्षों पश्चात उसे हैजा संक्रमण होता है और वह कई दिनों तक बिना इलाज के तड़पता रहता है। पर रजुआ में जीवन के प्रति एक आकर्षण था, भले ही उसका जीवन निम्न कोटि का था किंतु वह जीने की इच्छा से उद्वेलित था और अपने गाँव में चीजें ठीक करने का उसके पास कारण भी था। अपनी इस जिजीविषा के फलस्वरूप रजुआ हैजा, गरीबी, भुखमरी, कलंक सभी को मात देता है और जीता है।

यहाँ यह छोटा सा प्रसंग हमें हमारे जीवन के मर्म तक पहुँचाता है कि यदि हमारे पास जीने के लिये कारण है

तो हम लगभग हर परिस्थिति को सहन कर जाते हैं। आगे सूक्ष्म विश्लेषण के माध्यम से हम इसे और गहराई से समझेंगे।

डार्विन के जैविक उद्विकास सिद्धांत के अनुसार मनुष्य समेत सभी प्राणियों की पहली आवश्यकता है, जीवन के अस्तित्व की। डार्विन ने यह वैज्ञानिक तरीके से समझाया है कि किस प्रकार जीने के लिए, अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये प्रजातियाँ परिवर्तन, आवश्यकता के अनुरूप खुद को ढालती आयी हैं। मनुष्य जिसने हर परिवर्तन को आत्मसात किया है वह आज भी नियति को आकार दे रहा वहीं डायनासोर समेत कई प्रजातियाँ परिस्थितियों के वश में विलुप्त हो गयीं।

यह समझने के पश्चात कि जीवन की रक्षा प्राथमिक आवश्यकता है, हमें इसकी पड़ताल भी करनी चाहिए कि जीवन क्या है? जीना या सही मायनों में जीना

किसे कहते हैं ?

सबसे खतरनाक होता है
सब कुछ सहन कर जाना
मुर्दा शांति से भर जाना.
जाना रोज काम पर और
काम से लौट कर घर को आना।

उपर्युक्त पंक्तियाँ जीवन के उस रूप को व्याख्यायित कर रही हैं जिसे वर्तमान उपभोक्तावादी मानसिकता ने स्वीकार किया है जिसमें भौतिक साधनों का संकलन तथा यांत्रिक कार्य को जीवन माना गया है।

हालांकि जीवन के अन्य आयाम भी हैं जिनमें से पहला है रोटी, कपड़ा तथा मकान अर्थात न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु संघर्ष करना। वहीं जीवन का दूसरा आयाम उसकी व्यापकता है अर्थात स्वतंत्रता, समानता जैसे अधिकार युक्त जीवन हेतु संघर्ष करना, एक समावेशी, प्रगतिशील राष्ट्र में जीवन को आकार देना।

आज 21वीं सदी में जब मानव चाँद तथा महासागरों का अन्वेषण कर रहा है तब यह विडंबना ही है कि कुछ समाजों में रोटी, कपड़ा तथा मकान के लिये भी मनुष्य को संघर्ष करना पड़ रहा है। अफ्रीका, पश्चिम एशीया समेत अधिकांश अल्प विकसित तथा नृजातीय संघर्षों की पीड़ा झेल रहे समाजों में जीवन जीने के लिये इन अमानवीय परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है।

यह कुछ हद तक वैसा ही है जैसे नाजी शासन में यहूदी संहार के समय एक छोटी किंतु साहसी बच्ची ऐनी फ्रैंक को जीवन हेतु सामना करना पड़ा था।

चूँकि हमारे पास इसका उत्तर नहीं है कि इस जीवन के पश्चात क्या होता है, जीवन के बाद की स्थिति में हमारा अस्तित्व क्या है। इस वजह से हम इसी जीवन में संपूर्णता प्राप्त करना

चाहते हैं। किसी कवि ने कहा भी है कि

इस पार प्रिये तुम हो
मधु है
उस पार न जाने क्या होगा ॥.

अब अगर हम विश्लेषण को आगे बढ़ाते हुए जीवन के व्यापक आयाम पर दृष्टिपात करें तो हम पायेंगे यही वह कारण है जो हमें जीवन जीने का अर्थपूर्ण उद्देश्य देता है। स्वतंत्रता, समानता जैसे मूल्यों, परिवार-समाज तथा राष्ट्र की रक्षा, समाज की बेहतरी और अपने सिद्धांतों की रक्षा ऐसे कुछ कारण हैं जो हमें साहस देते हैं, हमें वह अदम्य जिजीविषा देते हैं जहाँ हम सब कुछ सह जाते हैं।

इन्हीं मूल्यों में से स्वतंत्रता, समानता तथा राष्ट्र की प्रगति से उद्वेलित भगत सिंह लगभग हर परिस्थिति को सहन कर जाते हैं। जेल की यातना से लेकर भूख तक को वह सिर्फ इसलिये सह पाते

हैं कि उन्हें अपने राष्ट्र को जिंदा रखना था। भारत समेत एशिया-अफ्रीका के अधिकांश स्वतंत्रता नायकों ने अपने राष्ट्र की जीवंत साँसों हेतु साम्राज्यवाद की हर एक यातना को सहा।

वर्तमान में भी जब रूस ने यूक्रेन पर सशस्त्र संघर्ष आरोपित किया हुआ है तब यूक्रेन अदम्य प्रतिरोध का परिचय दे रहा है। और यह साहस विश्व की इसरी सबसे बड़ी सैन्यशक्ति के खिलाफ है तो इसकी मुख्य वजह यही है कि प्रत्येक यूक्रेनी नागरिक स्वतंत्रता, राष्ट्रवाद तथा स्वाभिमान से प्रेरित होकर हर दबाव सहने के लिये तैयार है।

इस चर्चा के इसरे पक्ष पर भी अब विचार करना आवश्यक है कि ऐसा क्यों नहीं होता कि हम सभी के पास जीने के लिये वह कारण हो जो हमें सब कुछ का प्रतिरोध करने के लिये तैयार करे?

इसका एक प्रमुख कारण समाजीकरण की प्रक्रिया में है। जो समाज स्वतंत्रता अपने मूल्यों की रक्षा हेतु जितना अडिग होगा उस समाज की अगली पीढ़ी उन मूल्यों की रक्षा हेतु उतना ही अदम्य साहस प्रस्तुत करेगी। यथा भारत में लोकतंत्र इसकी जीवनशैली का भाग है। ऐसे में जब 1970-80 के दशक में भारतीय निर्वाचन आयोग की प्रभाविता के सम्मुख प्रश्न खड़े हुए तब टी॰एन॰ शेषन जैसे आयुक्तों व संपूर्ण संस्था ने भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा हेतु प्रत्येक राजनीतिक दबाव को सहा। वहीं चीन, पाकिस्तान, जैसे राष्ट्रों में स्वतंत्रता, समानता तथा लोकतंत्र जैसे मूल्य इतने दृढ़ नहीं हैं कि वर्तमान पीढ़ी उनकी रक्षा हेतु राज्य के दबाव, शोषण का प्रतिकार करने में समर्थ हो सके।

(Don't Write anything in this Area/ इस स्थान पर कुछ न लिखें)

बात को संपूर्णता में समझने के लिये अगर एक और आयाम पर विचार करें कि क्या जीने की चाह हेतु आवश्यक है कि हर परिस्थिति मानवीय - अमानवीय सहन की ही जाय? यह कहने में या स्वीकारने में कोई हिचक नहीं है कि संघर्ष जीवन का एक भाग है, किंतु यह तब अमानवीय हो जाता है जब इसे कृत्रिम रूप से आरोपित किया जाये। संसाधनों, समानता के अभाव में लड़े गये एक जीवन को महिमामंडित कर सभी से वही आशा की जाये उचित.

मैंने जब जब उसको देखा
लोहा देखा
लोहे जैसे तपता देखा
गोली जैसे चलता देखा ॥

उपर्युक्त पंक्तियों में हमें दशरथ मांझी, मिल्खा सिंह, चिपको आंदोलन आदि कई संघर्षों की झलक मिलती है। किंतु क्या इनके संघर्ष को इतना सामान्य

किया जाना चाहिए कि समाज के हर व्यक्ति से यह कहा जाए कि अगर तुम्हें जीना है तो हर परिस्थिति को सहन करना सीखो। वर्तमान में कोटा में हो रहे विद्यार्थियों की आत्महत्याएँ क्या इसी मानसिकता का परिणाम नहीं है? समाज तथा हमने ऐसे मानक पहले से निर्धारित कर रखे हैं कि आज उनमें परिवर्तन के लिये संघर्ष नहीं हो पा रहा। यांत्रिक रूप से हमारे जीवन जीने के कारण वही आरोपित मानक बन चुके हैं।

आज यह वर्तमान समय की आवश्यकता है कि समाज-सरकार वह न्यूनतम जीवन स्थितियाँ प्रदान कराएँ जहाँ दशरथ माँझी को स्वास्थ्य हेतु पहाड़ न काटना पड़े, जगत सिंह को स्वतंत्रता की रक्षा करने हेतु जीवनोत्सर्ग न करना पड़े तथा पर्यावरण बचाने हेतु चिपको दोहराना न पड़े।

आप धीरे धीरे मरने लगते हैं
अगर आप करते नहीं कोई यात्रा
अगर आप पढ़ते नहीं कोई किताब
अगर आप नहीं करने देते मदद अपनी
न करते हैं इसरो की

"पाब्लो नेरुदा की ये कुछ पंक्तियाँ हमारी संपूर्ण चर्चा को संक्षेप में उद्घाटित करती हैं। जहाँ जीना जैविक उद्विकास की प्राथमिक शर्त है वहीं यह जीना/जीवन तब तक आकार नहीं ग्रहण करता जब तक हम अपना उद्देश्य नहीं पाते। यह उद्देश्य समाज हित में जरूर हो सकता है लेकिन समाज द्वारा थोपा हुआ नहीं हो सकता। यह उद्देश्य जितना सार्थक, व्यापक होगा जीवन उतना ही सहज और सार्थक होगा। हालांकि सामूहिक रूप से हमें यह भी प्रयास करना चाहिए कि रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य वर्तमान समय में जीवन की दिशा निर्धारित न कर पाये।" हम एक

(Don't Write anything in this Area/ इस स्थान पर कुछ न लिखें)

ऐसे समाज का निर्माण करें जहाँ जीवन जीने का कारण रजुआ की अभावग्रस्त जिंदगी न हो बल्कि समाज, राष्ट्र, व्यक्ति की प्रगति के स्वप्न हों"

Feedback

Feedback to be provided in terms of (1) Introduction (2) Sentence Constructions (3) Parapgraph Formation (4) Legibility (5) Deviation from Topic (6) Coverage of dimensions (7) Simplicity / ease of reading

ForumIAS

SECTION – B

1. A mind that is stretched by a new experience can never go back to its old dimensions.

   जो मन किसी नये अनुभव से खिंच जाता है वह कभी भी अपने पुराने आयामों पर वापस नहीं जा सकता।

2. One health approach: a call for ecological equity.

   एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण : पारिस्थितिक समानता का आह्वान।

3. Culture can unite what history and geography has divided.

   संस्कृति उसे एकजुट कर सकती है जिसे इतिहास और भूगोल ने विभाजित किया है।

4. Social evils have not completely left the ground, instead are changing their form.

   सामाजिक कुरीतियाँ व्यवहार में पूरी तरह से ख़त्म नहीं हुई हैं, बल्कि अपना रूप बदलती जा रही हैं।

सामाजिक कुरीतियाँ व्यवहार में पूरी तरह से खत्म नहीं हुई हैं, बल्कि अपना रूप बदलती जा रही हैं।

मनोवैज्ञानिक विश्लेषकों तथा समाज शास्त्रियों के अनुसार मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं; उसकी गतिविधियों, संबंधों आदि का व्यापक कैनवास समाज ही हैं। मनुष्य तथा समाज एक अन्योन्याश्रय संबंध हैं यथा मनुष्य समाज को प्रभावित

भी करता है तथा समाज से चालित भी होता है। समाज की अपनी एक विशेष कार्यप्रणाली होती है जो लगभग क्षेत्र तथा समय निरपेक्ष है।

इसी क्रम में समाज अपने संचालन हेतु नियमों को आकार देता है, कुछ सामूहिक मान्यताओं को गढ़ता है, अपनी नैतिकता के प्रतिमान घोषित करता है। किंतु दुर्भाग्यवश यह प्रणाली समय के साथ तारतम्य नहीं बैठा पाती और इसकी वर्गीय हितों के अनुसार व्याख्या होने लगती है जो अंततः कुछ रीतियों को कुरीतियों में परिवर्तित करता है। और यही कुरीतियाँ समाज के साथ व्यक्ति की चेतनता की जगह जड़ता को प्रोत्साहित करने लगती हैं। यथा- अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका में व्याप्त रंगभेद, भारत में मध्यकाल तथा प्रारंभिक आधुनिक काल में व्याप्त बालविवाह, कन्या भ्रूण हत्या, सतीप्रथा, छुआछूत।

जातीय शोषण. हाथ से मैला ढोने की प्रथा आदि विद्यमान थी।

हालांकि 18-19वीं सदी से आज हमने 21वीं सदी तक की यात्रा की है। निःसंदेह हमने प्रगति की होगी किंतु क्या यह प्रगति पर्याप्त हुयी है कि इन कुरीतियों का खात्मा हो गया हो? या ये आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान हैं? ये कुरीतियाँ कहीं आज बदले हुए स्वरूप में सामाजिक स्वीकृति तो नहीं हासिल कर चुकी हैं?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर खोजने से पहले हमें इन कुरीतियों के उन्मूलन के अतीत में किये गये प्रयासों से परिचय पा लेना चाहिए।

मध्यकाल में सामंतवाद की परिणति यूरोपीय समाज में दास व्यवस्था के रूप में हुयी थी। यह अत्यंत अमानवीय व्यवस्था जहाँ कुछ लोग अन्य के लिये साधन के रूप में उपयोग में आते थे। फ्रांसीसी

क्रांति (1789) ने इस दासत्व व्यवस्था का यूरोप से तो उन्मूलन कर दिया था किंतु यह अमेरिका व अफ्रीका में परवर्ती समय तक जारी रही। इसी प्रकार रंगभेद जहाँ श्वेत-अश्वेत के मध्य भेदभाव कायम था पश्चिमी राष्ट्रों से बीसवीं सदी के परवर्ती चरणों में ही खत्म हुआ।

भारतीय उपमहाद्वीप में भी नवजागरण के रूप में सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया गया। राजा राम मोहनराय के नेतृत्व में ईश्वर चंद्र विद्यासागर, अक्षय दत्त, ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई आदि ने पहल की। परिणामस्वरूप सती प्रथा पर 1829 में प्रतिबंध लगाया गया तथा भारी सामाजिक प्रतिरोध के बावजूद बाल विवाह व अन्य कुरीतियों में कमी आयी।

आगे बीसवीं सदी के प्रारंभिक दशकों में महात्मा गांधी, डॉ. भीमराव अंबेडकर, एनी बेसेण्ट आदि ने जातिगत

भेदभाव, दुर्व्यवहार व महिला शोषणपरक कुरीतियों के खिलाफ मुहिम चलायी। गांधी जी के हरिजन अभियान विशेष सफलता के थे। स्वतंत्रता आंदोलन नेतृत्ववर्ग तथा ब्रिटिश अधिनियमों के सामूहिक सहयोग के माध्यम से कुरीतियों पर व्यापक लगाम लगाया गया।

हालांकि यह स्वतंत्रता उपरांत ही संभव हो पाया जब मूल अधिकार तथा आई॰ पी॰ सी॰ और अंतर्राष्ट्रीय समझौतों को भारत ने अपनाया कि कानून के स्तर पर सैद्धांतिक रूप में सभी सामाजिक कुरीतियाँ जड़ से खत्म कर दी गयीं और आपराधिक कृत्य घोषित हुयीं। यथा- संविधान का अनुच्छेद 17- अस्पृश्यता को अपराध घोषित करता है; अनुच्छेद 23 और 24 बंधुआ मजदूरी का उन्मूलन करते हैं वहीं समानता का अधिकार महिला समानता को बढावा देते हैं।

अब अगर हम अपने विश्लेषण को आगे बढ़ाते हैं तो हम पाएँगे कि ये कुरीतियाँ भले ही सैद्धांतिक तौर पर उन्मूलित कर दी गयी हों किंतु व्यवहार में हम सभी के मध्य यह आज भी बदले हुए रूप में विद्यमान हैं।

भारत में कन्या भ्रूण हत्या अपराध है; तथा गर्भ का चिकित्सीय समापन अधिनियम 1971 इसे मूर्त रूप भी देता है। तब भी समाज में अवैध लिंग परीक्षण क्लीनिक चल रहे हैं; और भली प्रकार से शिक्षित लोग इन क्लीनिक के माध्यम से लिंग परीक्षण करा भी रहे हैं। हालांकि यह जरूर हुआ है कि तीव्रता तथा पैमाने पर कमी आयी है। इसका प्रमाण भारत का बढ़ता लिंगानुपात भी है।

छुआछूत तथा जाति आधारित भेदभाव भारतीय सामाजिक व्यवस्था का अमानवीय रूप था। नागरिक अधिकार

(संरक्षण) अधिनियम 1955 तथा जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950, 1951 के माध्यम से इसके विरुद्ध कड़ी सजा का प्रावधान किया गया है। परंतु वर्तमान में विद्यालयों में हो रहे जातिगत आधार पर प्रवेश, सरकारी विभागों में जातिगत गुटबंदी तथा राजनीति में वोट बैंक पालिटिक्स, इसका सर्वोत्तम उदाहरण है कि जातिगत भेदभाव किस प्रकार बदले हुये रूप में विद्यमान है।

भारत में दहेज लेना और दहेज देना दोनों अपराध हैं, यह ऐसी सामाजिक कुरीति थी जो लड़कियों का वस्तुकरण करती थी। दुर्भाग्यवश यह कुप्रथा भी बदले हुये चोले में विद्यमान है जिसमें दहेज शब्द को मँहगे उपहारों, भेंट ने प्रतिस्थापित कर दिया है। यह कुरीति भारत के सभी क्षेत्रों, वर्गों, समुदायों में बराबर देखी जा सकती है।

(Don't Write anything in this Area/ इस स्थान पर कुछ न लिखें)

बाल विवाह उन्मूलन के 19वीं सदी के आरंभ से ही प्रयास किये जाते रहे हैं किंतु वर्तमान में इनका संस्थाकरण हो चुका है यथा- राजस्थान में अक्षय तृतीया के अवसर पर। आज भारत वैश्विक स्तर पर एक तिहाई बाल वधुओं का घर है।

हालांकि तस्वीर का दूसरा पक्ष भी है जहाँ कई अमानवीय सामाजिक कुरीतियों का व्यापक पैमाने पर उन्मूलन किया गया है यथा- सतीप्रथा जो पति की मौत पर पत्नी को जिंदा जलने पर मजबूर करती था, का उन्मूलन किया जा चुका है।

न्यूनतम मजदूरी के प्रावधानों ने व्यापक तौर पर बंधुआ मजदूरी तथा बलात श्रम को भी खत्म किया है और नरबलि जैसी सामाजिक कुरीतियों का भी उन्मूलन संभव हुआ है।

एक बार जब हम यह समझ चुके हैं कि सामाजिक कुरीतियों ने समय के साथ सामंजस्य स्थापित किया है और वे आज भी कायम हैं। तब स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि ऐसे कौन से कारक हैं जो सामाजिक कुरीतियों की परिवर्तनीयता हेतु उत्तरदायी हैं?

इसका पहला कारण है कि कानून की सफलता इस बात से तय होती है कि वह सामाजिक स्वीकृति हासिल कर पाया है या नहीं। यह विरले ही होता है कि सामाजिक स्वीकृति के अभाव में कानून सफल हो। भारत में दहेज प्रथा तथा जातिगत भेदभाव के पीछे यही कारण देखा जा सकता है।

साथ ही यह भी आवश्यक है कि कानून का क्रियान्वयन भली प्रकार हो। दुर्भाग्यवश इस ओर हमने सार्थक प्रयास नहीं किये और सामाजिक सहयोग के

अभाव में कानून का क्रियान्वयन कठिन साबित होता है।

तीसरा प्रमुख कारण वंचित वर्गों का पर्याप्त सशक्तीकरण न होना है। आज भी भारत में मात्र 10% महिलाएँ संसद सदस्यों में से हैं जहाँ वैश्विक औसत 22% है। साथ ही सामाजिक न्याय प्रदान करने में सभी वर्गों को साथ में लेकर न चलना भी प्रमुख कारण रहा है।

हालांकि वर्तमान में आवश्यकता है कि हम सामाजिक कुरीतियों के नये चेहरों की पहचान करें, एक सामाजिक स्वीकृति कायम करें। और बॉटम टू टॉप अप्रोच के माध्यम से नवजागरण काल की तीव्रता के समान ही इनके उन्मूलन का प्रयास करें जहाँ एक ओर कानून का बेहतर क्रियान्वयन होगा वहीं इसरी ओर वंचित वर्गों

का सशक्तीकरण।

माना है अंधेरी रात
पर दीया जलाना कब मना है

(हरिवंश राय बच्चन)

"भारतीय संविधान वह तमाम उपबंध करता है जिसके माध्यम से हम एक समावेशी व स्वस्थ समाज का निर्माण कर सके। हमें सामूहिक रूपसे और व्यक्तिगत स्तर पर यह प्रयास करना है कि हम कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाएँ, सहन करने की जगह प्रतिरोध विकसित करें। आज भारत जब जी-20 की अध्यक्षता कर रहा है, चाँद पर सभ्यता का अन्वेषण कर रहा है तो यह अत्यंत शोचनीय है कि किसी भी प्रकार की कुरीति समाज में विद्यमान हो। कुरीतियों का उन्मूलन व स्वस्थ, सतत तथा समावेशी समाज राष्ट्र- सरकार- समाज तथा हम सभी के माध्यम से संभव हो सकेगा।"

(Don't Write anything in this Area इस स्थान पर कुछ न लिखें)

Feedback

Feedback to be provided in terms of (1) Introduction (2) Sentence Constructions (3) Parapgraph Formation (4) Legibility (5) Deviation from Topic (6) Coverage of dimensions (7) Simplicity / ease of reading

ForumIAS

Availing Mentorship - Now made easy & seamless via mentorship.forumias.com

Dear Students,

You can now avail Mentorship in both online & offline mode seamlessly. All you need to do is login to below URL and pick up a date and time and your Mentorship is scheduled at the designated time.

Visit the URL https://mentorship.forumias.com or Scan the QR code

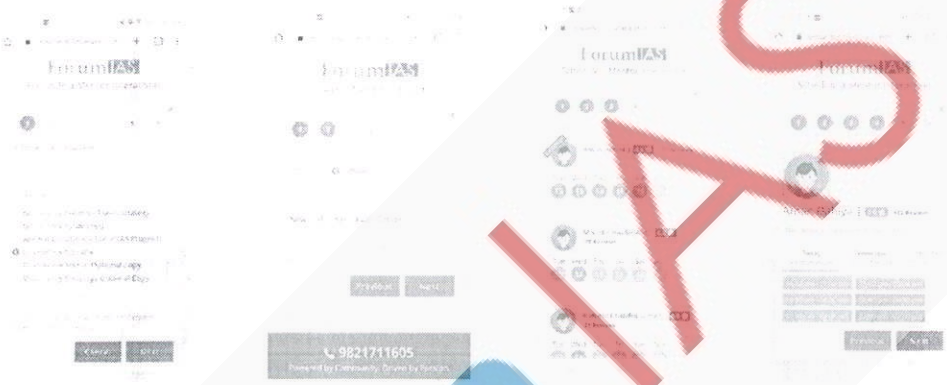

When must you seek mentorship? When you are unable to fully comprehend the directions given by the evaluator in the MGP copy. A Mentor will help you understand the nuiances of your evaluated MGP copy. He / She will also be able to make suggestions, if needed, on improvements that you could make.

If we are already doing well, a reinforcement from the Mentor will further assist us in following the right path. A Mentor may also be able to give valuable inputs with respect to time management, presentation, structure etc. He may recommend you clearly to work on content or may suggest you to take courses / read books in case he feels you lack content that may be quickly improved with a course at ForumIAS or elsewhere, or some study material.

To download topper's copies, visit the link https://blog.forumias.com/testimonials

Topper's Testimonials and Test Copies

CSE 2021 Topper's Testimonials and Test Copies

CSE Rank 1, Shruti Sharma, Download MGP Copies + Testimonial Click Here
CSE Rank 5, Utkarsh Dwivedi, Download MGP Copies + Testimonial Click Here
CSE Rank 8, Ishita Rathi, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 9, Preetam Kumar, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 12, Yasharth Shekhar, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 14, Abhinav J Jain, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 17, Mehak Jain, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 19, Diksha Joshi, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 20, Arpit Chauhan, Download MGP Copies + Testimonial Click Here
CSE Rank 23, Ashish, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 24, Pusapati Sahitya, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 25, Shruti Rajlakshmi, Download MGP Copies + Testimonial Click Here
CSE Rank 26, Utsav Anand, Download MGP Copies, Click Here
CSE Rank 28, Mourya Bharadwaj Mantri, Download MGP Copies + Testimonial Click Here
CSE Rank 30, Naman Goyal, Download MGP Copies + Testimonial Click Here
CSE Rank 33, Jaspinder Singh, Download MGP Copies, Click Here
CSE Rank 37, V Sanjana Simha, Download MGP Copies, Click Here
CSE Rank 39, Vishal Dhakad, Download MGP Copies, Click Here
CSE Rank 40, Kushal Jain, Download MGP Copies, Click Here

ForumIAS

⇒ जीने की लिए कारण : हर परिस्थिति को सहन कर सकता है।

हम जीएंगे हरिणशावक — कालिदास
कामायनी
literature

जीना क्या होता है?
आवश्यक अधिकार — सुबह से शाम तक काम + स्वतंत्रता — रोटी कपड़ा मकान

अस्तित्व संघर्ष : युद्ध, नरसंहार, दंगे, stat attack

क्या हर परिस्थिति सहन की जा सकती है / की जानी चाहिए
कोई suicide

जब जब सबसे खतरनाक होता है

समय की परिवर्तनीयता + सकारात्मक दृष्टिकोण

वह कैसे सहन कर लेता है
क्यों सहन कर लेता है ⇒ उद्देश्य क्या होते हैं, stake पर क्या लगा होता है

example :- व्यक्ति — दशरथ मांझी, गांधी, एनी फ्रैंक
संस्था — U.N., निर्वाचन आयोग, भारतीय संस्कृति
राष्ट्र — भारत, जापान
मिथक — कर्ण, भीष्म पितामह
पृथ्वी / पर्यावरण — पर्यावरण

चाहता तो बच सकता था

स्पर्धा में जोड़ना — संस्कृति

सामाजिक कुरीतियाँ व्यवहार में पूरी तरह से खत्म नहीं हुई बल्कि अपना रूप बदलती जा रही हैं।

सिद्धांततः खत्म ⇒ FR, IPC, dpsp, + d. — रंगभेद, धार्मिक भेद
व्यावहारिक :- आंशिक : खत्म — SL भाषायी भेद, जातिविशेष
पूरी तरह खत्म ⇒ सती प्रथा

सामाजिक कुरीति क्या होती है
कुछ के example :- (2 pages) — बाल विवाह, विधवा विवाह, जाति प्रथा :- छुआछूत, बहुविवाह, वृद्धाश्रम; कन्या भ्रूण हत्या, हाथ से मैला ढोना, मंदिर में महिला प्रवेश ⇒ 5 page

खत्म करने के प्रयास :- 1 page

संविधान + प्रगति :- 1 page + half

वर्तमान स्थिति पर मूल focus. Rest 5 page